

माता-पिता और बच्चों के संबंधों को घेरने वाली विभिन्न प्रणाली में मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन

SHALU TIWARI

Research Scholar, OPJS University, Churu Rajasthan

SHOWKET AHMAD WANI

Assistant Professor, OPJS University, Rajasthan Churu Rajasthan

सारांश

आज के किशोर बच्चे कल के भविष्य हैं। चूंकि स्वस्थ लोग एक स्वस्थ राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए हमारे किशोर बच्चों का समग्र विकास जिसमें शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दोनों तरह की भलाई शामिल है, हमारी प्राथमिक चिंता होनी चाहिए। किशोर बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य को विकसित करने के लिए सरकारी और निजी संगठनों द्वारा बहुत सारे उपाय किए जाते हैं। लेकिन उनके मानसिक स्वास्थ्य को बहुत कम महत्व दिया जाता है। किशोर बच्चों की मनोवैज्ञानिक भलाई स्कूल, दोस्तों, पड़ोसियों, परिवार के प्रकार, लिंग, धर्म, माता-पिता की सामाजिक आर्थिक स्थिति जैसे कुछ कारकों से प्रभावित होती है, लेकिन मुख्य रूप से उनके माता-पिता द्वारा। अध्ययन के लिए किए गए साहित्य की समीक्षा से पता चलता है कि यह समझने के लिए भारतीय अध्ययनों की कमी है कि माता-पिता किशोर बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण को कैसे सुविधाजनक बना सकते हैं। माता-पिता की अस्वीकृति मनोवैज्ञानिक कल्याण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। किशोर बच्चों में स्वायत्तता के विकास में पिता का प्रमुख योगदान होता है। वैवाहिक संघर्ष और वैवाहिक समायोजन ने किशोर बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण में योगदान नहीं दिया है। किशोर बच्चों की मनोवैज्ञानिक भलाई, पालन-पोषण शैलियों के विभिन्न पहलुओं से दृढ़ता से जुड़ी होती है। इसका तात्पर्य यह है कि माता-पिता बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इसलिए माता-पिता को उन शैलियों को अपनाना चाहिए जो मनोवैज्ञानिक कल्याण के सभी पहलुओं को सुगम बनाती हैं और उन लोगों को ठीक करने में मदद करती हैं जो किशोर बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण में हस्तक्षेप कर रहे हैं ताकि हमारे पास मजबूत और स्वस्थ भविष्य के वयस्क हो सकें।

मुख्यशब्द:- माता-पिता, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, मनोवैज्ञानिक विकास, बच्चों की मनोवैज्ञानिक स्थिति



प्रस्तावना

किशोर बच्चे हमारे भविष्य की प्रगति और प्रतिबिंब हैं। यह इन बच्चों की समृद्धि को हर किसी की जिम्मेदारी बनाता है - तत्काल व्यक्ति से लेकर प्रत्येक माता-पिता तक, विस्तारित रिश्तेदारों तक, शिक्षकों तक और विश्वव्यापी समुदाय के लिए। यहां की समृद्धि का मतलब इन बच्चों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों है। बच्चों के शारीरिक विकास के बारे में बहुत कुछ कहा जाता है और किशोर बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों को भी बहुत महत्व दिया जाता है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि उनकी शारीरिक वृद्धि को हमारी नग्न आंखों से देखा जा सकता है। लेकिन इन बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बारे में बहुत कम बात की जाती है और उन कारकों (विशेषकर लोगों और पर्यावरण) के बारे में भी कम बात की जाती है जो इन बच्चों के व्यवहार, विचारों और भावनाओं को आकार देते हैं और प्रभावित करते हैं। एरिक एरिकसन के अनुसार, बच्चा जन्म के एक वर्ष के भीतर ट्रस्ट बनाम अविश्वास की अवधारणा सीखता है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है और स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह की अवधारणा सीखता है, तो वह अपराध की भावना को शुरू करना या विकसित करना भी सीखता है। तो, 5 वर्ष की आयु तक लगभग सभी बच्चे इन गुणों या मनोवैज्ञानिक शक्तियों को दूर ले जा सकते हैं जो उन्हें जीवन के बाकी चरणों में मदद करेंगे। 5 वर्ष की आयु तक, माता-पिता और तत्काल परिवार बच्चे की दुनिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और वे भविष्य के एक मजबूत / स्वस्थ इंसान के निर्माण में मदद कर सकते हैं। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, दोस्तों, पड़ोसियों, शिक्षकों, फिल्म अभिनेताओं, प्रसिद्ध हस्तियों का इन बच्चों पर प्रभाव पड़ता है। लेकिन इन बच्चों के 'तबुला रस' में उनके जीवन के शुरुआती वर्षों में जो कुछ भी लिखा गया है वह हमेशा के लिए रहता है। बच्चों पर माता-पिता का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और एक-दूसरे के प्रति और बच्चों के प्रति उनका रवैया बच्चों द्वारा देखा जाता है। "आज के बच्चे कल का भाग्य हैं" एक प्रसिद्ध अफ्रीकी कहावत है जो निरंतर बनी रहती है क्योंकि बच्चे बड़े होकर आने वाले समाज के वयस्क, अग्रणी और नागरिक बनेंगे। हमारे बच्चों के सामान्य स्वास्थ्य का ध्यान रखना अनिवार्य है क्योंकि इसका सीधा प्रभाव हमारे भविष्य पर पड़ता है। सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और सरकारों जैसे सामुदायिक अग्रदूतों के बीच अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ विषय है।



यह प्राथमिक प्रयास यह देखने का है कि भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के किशोर बच्चे अपने माता-पिता की पालन-पोषण शैली को कैसे देखते हैं और यह देखने के लिए कि क्या इन बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर इसका प्रभाव पड़ता है। यह पता लगाने का भी एक प्रयास है कि क्या किशोर बच्चे के लिंग का पालन-पोषण के तरीके पर प्रभाव पड़ता है और इसलिए बच्चों की मनोवैज्ञानिक भलाई। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न माता-पिता के घटकों का पता लगाना है जो किशोर बच्चों की भलाई को बढ़ावा देते हैं। साथ ही, यह पता लगाने का प्रयास है कि कौन से अभिभावक घटक इन बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण को अवनत करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

बी आर साहित्य एट अल (2019) पारिवारिक शैलियों और भारतीय बच्चों पर इसके प्रभाव पर एक क्रॉस सांस्कृतिक समीक्षा के साथ तैयार है। इस अध्ययन के अनुसार, पालन-पोषण सामाजिक सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, पालन-पोषण एक सतत और विकसित होने वाली प्रक्रिया है और बाल विकास और बचपन के मनोविज्ञान के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान कारक है। इस शोध ने पारिवारिक शैलियों और बच्चे के परिणाम के बीच संबंध खोजने की कोशिश की और भारत और पश्चिमी देशों में आयोजित किया गया। उन्होंने यह देखने के लिए पश्चिम और भारत में किए गए अध्ययनों की समीक्षा की कि क्या सांस्कृतिक भिन्नताओं का पालन-पोषण शैलियों और उसके परिणामों पर कोई प्रभाव पड़ा है। उन्होंने पाया कि भले ही पश्चिम और भारत के बीच सांस्कृतिक भिन्नताएं थीं, लेकिन बच्चों पर पालन-पोषण की शैली का प्रभाव पूरी संस्कृति में समान था, और संस्कृति माता-पिता की शैली और बच्चे के परिणाम के लिए एक मध्यवर्ती के रूप में काम नहीं करती थी। पश्चिमी देशों और भारत दोनों में, आधिकारिक पालन-पोषण शैली सत्तावादी और उपेक्षित/असंबद्ध पालन-पोषण शैली की तुलना में बेहतर परिणाम से जुड़ी थी। पश्चिमी देशों और भारत दोनों में भोगवादी/अनुमोदक पालन-पोषण शैली पर मिश्रित समीक्षाएं थीं। अध्ययन में पारिवारिक शैलियों में सांस्कृतिक बदलाव और भविष्य के लिए इसके प्रभाव पर चर्चा की गई।

मसूद, एच., अहमद, एम.एस., जान, एफ.ए. एट अल। (2016) ने यह पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया कि क्या किशोरों के पालन-पोषण की शैली और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच कोई संबंध है। यह अध्ययन भारत में आयोजित किया गया था क्योंकि माता-पिता की शैलियों (आधिकारिक, सत्तावादी और



अनुमेय पालन-पोषण शैली) और किशोरों के शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंधों को देखने के लिए बहुत कम अध्ययन किए गए थे। शोधकर्ता यह देखना चाहते थे कि कैसे आत्म-प्रभावकारिता की भूमिका किशोरों की पारिवारिक शैलियों और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच मध्यस्थ चर के रूप में कार्य करती है। वे यह भी देखना चाहते थे कि बच्चों की विकास संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक पारिवारिक शैलियों ने अंततः उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार कैसे किया। इसलिए, इस अध्ययन ने एक मध्यस्थ चर के रूप में आत्म-प्रभावकारिता के साथ-साथ माता-पिता की शैलियों और अकादमिक प्रदर्शन के संबंधों का विश्लेषण किया। अध्ययन के परिणामों ने संकेत दिया कि व्यक्तिगत रूप से पालन-पोषण शैलियों का शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं था। इसके अलावा, आत्म-प्रभावकारिता ने केवल आधिकारिक पालन-पोषण शैली और अकादमिक प्रदर्शन के संबंध में मध्यस्थता की। इसलिए, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि किशोरों के मनोवैज्ञानिक विकास के लिए व्यक्तियों में आत्म-प्रभावकारिता एक महत्वपूर्ण गुण है। आत्म-प्रभावकारिता ने व्यक्ति के आत्मविश्वास को प्रगति के लिए बढ़ाया। उन्होंने महसूस किया कि भारत में पारिवारिक शैलियों और अकादमिक प्रदर्शन के संबंध पर और अधिक शोध करने की आवश्यकता है।

बैशाखी बनर्जी और सुप्रेरणा खन्ना (2018) ने लुधियाना, भारत के शहरी क्षेत्रों में किशोर बच्चों के सामाजिक कौशल पर माताओं के पालन-पोषण की शैलियों के प्रभाव को देखने के लिए एक अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि सामाजिक कौशल का विकास मां के रोजगार की स्थिति से प्रभावित होता है। इस अध्ययन के परिणामों ने संकेत दिया कि माता के प्रत्येक समूह में पुरुष और महिला किशोर बच्चों के बीच सामाजिक कौशल का कोई भी आयाम महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं था। हालांकि, गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों की तुलना में कामकाजी माताओं के बच्चों में सामाजिक कौशल के आयाम अधिक थे।

नीरजा एस और मेहरुनिसा एस (2016) ने किशोरों के बीच कथित पारिवारिक स्तर और आत्म सम्मान के बीच संबंधों की जांच करने के लिए एक अध्ययन किया। वे यह देखने की कोशिश कर रहे थे कि क्या माता-पिता और माता-पिता के साथ कथित पालन-पोषण कौशल (स्तर) का किशोरों के आत्म-सम्मान पर कोई प्रभाव पड़ा है। उनके अध्ययन ने यह भी देखने की कोशिश की कि क्या किशोरों के आत्म-सम्मान पर पिता, माता और माता-पिता (सम्पूर्ण रूप से) के कौशल का कोई प्रभाव पड़ा है। यह अध्ययन किशोरों के पालन-पोषण की धारणा पर आधारित था। परिणामों से पता चला कि किशोरों का आत्म-सम्मान



पारिवारिक स्तर से प्रभावित था। यह पाया गया कि लड़कियों का आत्म-सम्मान लड़कों की तुलना में अधिक था। हालाँकि, जन्म क्रम और पिता के व्यवसाय का किशोरों के आत्म-सम्मान पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा। इसलिए मूल रूप से, इस अध्ययन में पाया गया कि माता-पिता के पालन-पोषण का किशोरों के आत्म-सम्मान पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और इसलिए, माता-पिता और देखभाल करने वालों को बच्चे के पालन-पोषण में सर्वोत्तम प्रथाओं का उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

श्री जे. पी. बडगुजर और डॉ. निशा मुंडाडा (2014) ने यह देखने के लिए एक अध्ययन किया कि क्या किशोरों की पारिवारिक शैली और आत्म-अवधारणा के बीच कोई संबंध है। माता-पिता की शैली और आत्म-अवधारणा के बीच संबंधों के बारे में इस अध्ययन को संचालित करने के लिए, शोधकर्ताओं ने भारत के महाराष्ट्र राज्य के पचोरा से 400 आठवीं और दसवीं कक्षा के छात्रों को लिया। परिणाम के अनुसार, अधिकांश किशोरों ने अपने माता-पिता को पारिवारिक के मॉडल पर स्वीकार करने यानि स्वीकार्य पारिवारिक शैली के रूप में माना। परिणाम ने यह भी निष्कर्ष निकाला कि किशोरों की औसत आत्म-अवधारणा 56 प्रतिशत थी।

शितोले और शिरीष के. (2014) ने यह पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया कि क्या शहरी किशोरों के बीच सामाजिक परिपक्वता और कथित पारिवारिक शैलियों के बीच कोई संबंध था। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या माता-पिता की शैली में माता-पिता (पालन-पोषण के तरीके) शहरी सेटिंग में लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग थे और यह भी देखते हैं कि क्या इस पालन-पोषण स्तर ने उनकी सामाजिक परिपक्वता को प्रभावित किया है। इस अध्ययन के परिणामों ने संकेत दिया कि शहरी लड़कियों और लड़कों ने अपनी मां की पालन-पोषण शैली को कैसे माना और साथ ही शहरी लड़कियों और लड़कों ने अपने पिता की माता-पिता की शैली को कैसे माना, इस पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। इसके अलावा, उन्होंने यह भी पाया कि शहरी किशोरों के लिए, पिता और माता दोनों के पालन-पोषण की शैली का सामाजिक परिपक्वता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। यह भी पाया गया कि शहरी लड़कों के लिए माता की पालन-पोषण शैली और पिता की पालन-पोषण शैली के बीच कोई बड़ा संबंध नहीं था, लेकिन शहरी लड़कियों के लिए, माता की पालन-पोषण शैली और पिता की पालन-पोषण शैली के बीच प्रमुख संबंध था।



त्रिशाला और किरण (2015) ने यह पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया कि किशोरों ने पालन-पोषण की शैली को कैसे माना और उनकी भावनात्मक परिपक्वता के स्तर का भी पता लगाया। परिणामों से पता चला कि लड़के और लड़कियों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं था। लेकिन इस बात में अंतर था कि वे पालन-पोषण की शैली को कैसे समझते हैं। उत्तरदायी शैलियों और स्व-शासन शैलियों की कथित पारिवारिक शैलियों वाले किशोरों में उच्च भावनात्मक परिपक्वता थी, जबकि कथित पारिवारिक शैलियों का अनुरोध करने वाली कथित पारिवारिक शैलियों वाले किशोरों में कम भावनात्मक परिपक्वता थी।

Bi Xinwen et al (2018) ने मुख्य भूमि चीन में पालन-पोषण शैलियों और माता-पिता-किशोर संबंधों पर एक अध्ययन किया। उन्होंने यह शोध किया क्योंकि उनके देश में इस क्षेत्र में बहुत कम काम किया गया था। शोध ने माता-पिता और किशोर संबंधों और किशोरों के व्यवहार और विश्वासों पर संबंधों के प्रभाव को समझने की कोशिश की। अध्ययन में पाया गया कि कुछ माता-पिता शैलियों जैसे आधिकारिक और सत्तावादी शैली माता-पिता और किशोरों के बीच संबंधों की गुणवत्ता से निकटता से संबंधित थीं। अध्ययन में पाया गया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पारिवारिक शैली क्या थी, सभी पारिवारिक शैलियों के लिए माता-पिता-किशोर संघर्ष आवृत्ति के कुछ स्तर मौजूद थे। लेकिन जिन किशोरों के माता-पिता ने उपेक्षापूर्ण और अधिनायकवादी पालन-पोषण शैली का पालन किया, उन्होंने भोगी माता-पिता की तुलना में उच्च माता-पिता-किशोर संघर्ष की तीव्रता की सूचना दी। किशोरों ने बताया कि माता-पिता दोनों के साथ उच्चतम स्तर का सामंजस्य आधिकारिक माता-पिता के साथ था, इसके बाद भोगवादी, सत्तावादी और उपेक्षापूर्ण पालन-पोषण शैली थी। लड़कियों ने उन माताओं के साथ अधिक सामंजस्य की सूचना दी जो लड़कों की तुलना में आधिकारिक या अनुग्रहकारी पालन-पोषण शैली का पालन करती हैं।

व्यवहार का आदान-प्रदान और मन का आदान-प्रदान

"रिश्ते" "विनिमय" हैं जो लोगों के बीच मौजूद हैं। माँ-शिशु संबंधों के महत्व के संदर्भ में प्रारंभिक माता-पिता-बाल संबंधों पर अक्सर चर्चा की जाती है। मनोविज्ञान में, एक माँ और एक शिशु के बीच आदान-प्रदान को "माँ-शिशु बातचीत" कहा जाता है और आमतौर पर इसका अध्ययन किया जाता है। माँ-शिशु की बातचीत न केवल एकतरफा विकसित होती है, बल्कि एक माँ और एक शिशु के रूप में एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, प्रत्येक अपने व्यवहार को एक-दूसरे से मेल खाने के लिए बदलते हैं, और इसके विपरीत।



जन्म से, एक बच्चा विकास के चरण के आधार पर संवाद करने की अपनी क्षमताओं का सक्रिय रूप से प्रयोग करने की पहल करता है।

दो साल तक की बातचीत की विशेषताओं को प्रत्येक प्राथमिक विकासात्मक संक्रमण द्वारा संक्षेपित किया गया है। इन दो वर्षों के दौरान मां-शिशु बातचीत में एक बच्चे का व्यक्तिपरक अनुभव गुणात्मक रूप से अलग होता है कि इस चरण के दौरान शिशु कैसे विकसित होते हैं, इस कारण यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि किसी को सलाह देना है कि कैसे बच्चों की देखभाल करना और उनका पालन-पोषण करना।

माता-पिता और बच्चों के संबंधों में मनोवैज्ञानिक विकास

बच्चे के व्यवहार में अर्थ जोड़ने वाली मां द्वारा प्रारंभिक मां-शिशु बातचीत शुरू होती है, जो आदान-प्रदान में वृद्धि के रूप में भावनाओं के पारस्परिक समायोजन के लिए आगे बढ़ती है, और फिर अंतःक्रियात्मक रूप से अंतःक्रियात्मक रूप से अनुभव करना शुरू हो जाता है क्योंकि शिशु इरादों और दिमाग की उपस्थिति को समझना शुरू कर देता है अन्य लोगों में। माँ-शिशु बातचीत का महत्व "भावनाओं (मन) का साझा अनुभव" कहलाता है, जो शिशुओं के प्रभावशाली विकास या व्यक्तित्व निर्माण के लिए आवश्यक है। जब तक शिशु जन्म के दो साल के दूसरे भाग में शब्दों का उपयोग करके दूसरों के साथ बातचीत करना शुरू करता है, तब तक मातृ शिशु अंतःक्रिया का महत्वपूर्ण गुणात्मक पहलू पहले ही स्थापित हो चुका होगा। आइए हम एरिकसन के सिद्धांत पर आधारित इस चरण के दौरान मनोवैज्ञानिक विकास के कार्यों के संबंध में इसके बारे में सोचें) यह सर्वविदित है कि उन्होंने कहा कि जीवन के पहले वर्ष के लिए मनोवैज्ञानिक विकास का कार्य बुनियादी विश्वास हासिल करना है, और कार्य दो साल की उम्र के आसपास स्वायत्तता हासिल करना है। एरिकसन का कहना है कि विकास के लिए ये कार्य शिशु के लिए एक उपयुक्त पालन-पोषण वातावरण, अर्थात् गुणात्मक रूप से अनुकूल मातृ संबंध के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं। एक "अनुकूल मातृ संबंध" क्या है? दरअसल, इसका मतलब मां द्वारा पेश किया गया एकतरफा रिश्ता नहीं है। बल्कि, जैसा कि एम्डे) कहते हैं, यह पारस्परिक संबंध को दर्शाता है जो माता-पिता को मनोवैज्ञानिक रूप से पुरस्कृत करता है, साथ ही जब शिशु मां की प्रतिक्रिया के जवाब में भावनाओं को व्यक्त करता है। यह पहले उल्लेखित स्वस्थ मां-शिशु बातचीत के विकास से अलग नहीं है।



माता-पिता-बच्चे के रिश्ते को घेरने वाली विभिन्न प्रणाली

कोई भी यह स्वीकार करेगा कि बच्चे के शरीर और दिमाग के स्वस्थ विकास के लिए एक अच्छा अभिभावक वातावरण आवश्यक है। हालाँकि, आज हमारे समाज में, माता-पिता के लिए एक अच्छा अभिभावक वातावरण बनाने की पूरी जिम्मेदारी के साथ माँ पर बोझ डालने की गलतता को लोग पहचानने लगे हैं। सबसे महत्वपूर्ण समस्या यह होनी चाहिए कि कम जन्म दर के कारण स्थानीय क्षेत्रों में तेजी से घटते पालन-पोषण के कार्य के जवाब में यथार्थवादी उपाय अतिदेय हैं, जबकि यह भ्रम कि जब महिलाएं बच्चे को जन्म देती हैं तो स्वाभाविक रूप से पालन-पोषण कर सकती हैं। एक माँ के पालन-पोषण का भारी बोझ, एकल परिवार की ओर रुझान के बीच, इस वास्तविकता को प्रतिबिंबित कर सकता है कि पिता परिवार के ढांचे में बदलाव के अनुसार उससे अपेक्षित भूमिका नहीं निभा सकता है। स्वास्थ्य और कल्याण मंत्रालय (वर्तमान में, स्वास्थ्य, श्रम और कल्याण मंत्रालय) ने 1999 में कम जन्मदर और पालन-पोषण का समर्थन करने के उनके उपायों में से एक के रूप में एक पकड़ वाक्यांश बनाया, जो जाता है, "पालन में शामिल नहीं होने वाले पुरुषों को पिता नहीं कहा जाएगा।" मुझे याद है कि उस समय यह उचित था या नहीं, इस मुद्दे पर विभिन्न चर्चाएँ हुई थीं। यह स्पष्ट है कि जापान और विदेशों में किए गए सर्वेक्षणों से पिता आमतौर पर जापान में पालन-पोषण में शामिल नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए, प्रबंधन और समन्वय एजेंसी (वर्तमान में, लोक प्रबंधन, गृह मंत्रालय, डाक और दूरसंचार मंत्रालय) के जनगणना ब्यूरो द्वारा 1996 में किए गए सामाजिक जीवन पर एक बुनियादी सर्वेक्षण से पता चला है कि यहां तक कि पिताओं की पीढ़ी भी इसमें शामिल है। पालन-पोषण (25-29 वर्ष की आयु) प्रत्येक दिन औसतन केवल 12 मिनट "पालन-पोषण" (माताओं के लिए 2 घंटे 02 मिनट) में बिताते हैं। पुरुषों की ओर से पालन-पोषण में इतनी कम भागीदारी के कारणों को निर्धारित करने के लिए किए गए एक सर्वेक्षण ने तीन प्राथमिक कारणों का खुलासा किया: "काम के साथ व्यवसाय," "लिंग भूमिकाओं के विचार" (पुरुषों को काम करना है और महिलाओं को घर की देखभाल करनी है), और "बच्चों के बारे में पिता के विचार" (उदाहरण के लिए, जो लोग सोचते हैं कि "बच्चे माता-पिता के बिना बढ़ेंगे" वे पालन-पोषण में कम शामिल होते हैं)।

निष्कर्ष

बच्चों और माता-पिता के बीच संबंधों में मनोवैज्ञानिक प्रभावों से हमारे सामाजिक मॉडल काफी प्रभावित हैं। क्लिनिकल साइकोलॉजी में सबसे पहले एक चिकित्सक की नजर में जो चीज उछलती है, वह है



एक मां की मौजूदगी जो अपने बच्चों की समस्याओं से काफी हद तक जुड़ी हुई है। हालांकि, मेरे नैदानिक अनुभव में, ऐसे मामले अक्सर पिता की ओर से खराब पेरेंटिंग फंक्शन की समस्या से मुक्त नहीं होते हैं। परिवार बच्चों की देखभाल का सबसे मजबूत सहयोगी है। यहां तक कि परिवार के सदस्य जो बच्चों की परवरिश के कार्य को सीधे प्रभावित नहीं करते हैं, उनके परिवार के सदस्य को सबसे भारी पालन-पोषण बोझ के साथ समर्थन करने की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अलावा, एक विविध प्रणाली है जो माता-पिता-बच्चे की जोड़ी के बीच संबंधों का समर्थन करती है। माता-पिता-बच्चे के रिश्ते के आसपास के माहौल को देखना भी महत्वपूर्ण हो सकता है जिसे बदलने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अबुबकर, ए., वान डे विज्वर, एफ.जे.आर., सुरयानी, ए.ओ. (2015) पारिवारिक स्टाइल्स की धारणाएं और शहरी इंडोनेशियाई किशोरों के बीच मानसिक स्वास्थ्य और जीवन की संतुष्टि के साथ उनका जुड़ाव। जे चाइल्ड फैमिली स्टड 24, 2680–2692 <https://doi.org/10.1007/s10826-014-0070-x>

एडीए, खुश; महौर, पूजा; अग्रवाल, विवेक; आर्य, अमित; कर, सुजीत कुमार (2018) इंडियन एसोसिएशन फॉर चाइल्ड एंड अडोलेसेंट मेंटल हेल्थ के डिसोसिएटिव डिसऑर्डर जर्नल के साथ किशोरों में पारिवारिक स्टाइल्स और अटैचमेंट का अध्ययन। वॉल्यूम। 14 अंक 4, पृष्ठ 58-73. 16पी

AHMEDBOOKANI, S. (2014) साइकोलॉजिकल वेलबीइंग एंड पारिवारिक स्टाइल्स एज़ प्रेडिक्टर्स ऑफ़ मेंटल हेल्थ अमंग स्टूडेंट्स: इंप्लीकेशंस फ़ॉर हेल्थ प्रमोशन। बाल रोग के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2(3.3), 39-46। [21]

AKPUNNE, B., O AKINNAWO, E., & A OLAJIDE, O. (2020) नाइजीरियाई किशोरों की पारिवारिक स्टाइल्स और साइको-सोशल वेलबीइंग। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च एंड मैनेजमेंट, 8(02), 628-637। <https://doi.org/10.18535/ijmrm/v8i02.sh02>

ANSU फ़्रांसिस, ममता शिवानंद पाई और सुलोचना बड़ाबेट्टु (2020) किशोरों, व्यापक बाल और किशोर नर्सिंग के बीच मनोवैज्ञानिक कल्याण और कथित पारिवारिक शैली, डीओआई: 10.1080/24694193.2020.1743796



एस. अरोड़ा, ए. बाला (2016) जम्मू, भारत में किशोरों की सामाजिक परिपक्वता से संबंधित माता-पिता का प्रोत्साहन माना जाता है। सामाजिक विज्ञान कला और मानविकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 4(1), 30-32

आशा हेगड़े, आशा कामथ और कल्लोल रॉय (2015) क्या माता-पिता किशोर मानसिक स्वास्थ्य का निर्धारक हैं? - दक्षिण भारत में जनसंख्या आधारित अध्ययन। डीओआई 10.1515/ijamh-2015-0090

बीआर साहित्य, एसएम मनोहरी और रमन विजया (2019) पारिवारिक स्टाइल और बच्चों पर इसका प्रभाव - भारत, मानसिक स्वास्थ्य, धर्म और संस्कृति पर ध्यान देने के साथ एक क्रॉस कल्चरल रिव्यू, 22: 4, 357-383, डीओआई: 10.1080/13674676.2019.1594178

बैशाखी बनर्जी और सुपर्णा खन्ना (2018) लुधियाना, भारत के शहरी क्षेत्रों में किशोर बच्चों के सामाजिक कौशल पर पारिवारिक शैलियों का प्रभाव, मानविकी और सामाजिक विज्ञान के आईओएसआर जर्नल (आईओएसआर-जेएचएसएस) खंड 23, अंक 7, वर्। 7 पीपी 55-65

भट्टाचार्य पी और प्रधान आरके। (2015) भारतीय किशोरों की कथित पैतृक पालन-पोषण शैली और सक्रिय मुकाबला रणनीतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल स्टडीज 7(2)। 180-194। डीओआई:10.5539/ijps.v7n2p180

BI XINWEN, यांग यिकुन, ली हैली, वांग मेइपिंग, झांग वेन्क्सन, डेटर-डेकार्ड किर्बी (2018) पारिवारिक स्टाइल्स एंड पैरेंट-एडोलेसेंट रिलेशनशिप: द मेडिएटिंग रोल्स ऑफ बिहेवियरल ऑटोनॉमी एंड पैरेंटल अथॉरिटी फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी VOL9 URL=<https://www.frontiersin.org/article/10.3389/fpsyg.2018.02187> DOI=10.3389/fpsyg.2018.02187 ISSN=1664-1078